**1 पतरस**

**अध्याय एक**

**विषय कथन:** वह उद्धार जो हमने त्रिएक परमेश्‍वर से पाया है, उसमें आज के लिये एक जीवित आशा और कल के लिये एक अविनाशी मीरास है ताकि हम प्रेम के पवित्र जीवनों को जी सकें।

**पहला दिन**

**पढ़ें 1:1-5**

* 1-2 आयत के अनुसार, कौन-सी तीन भूमिकायें त्रिएक परमेश्‍वर के द्वारा निभाई गई हैं?
	+ परमेश्‍वर पिता
	+ परमेश्‍वर पुत्र
	+ परमेश्‍वर पवित्र आत्मा
* कौन-सी ऐसी दो चीज़ें हैं जो हम पद 3-4 के अनुसार पाते हैं?
* एक जीवित आशा और एक अनंत मीरास में क्या अंतर है?
* कैसे पतरस उस मीरास का बखान करता है जो हमारे लिये स्वर्ग में रखी गई है (पद 4-5)
* इस उद्धार को सुरक्षित रखने में मनुष्य का कार्य क्या है? परमेश्‍वर का क्या कार्य है?

**दूसरा दिन**

**पढ़े1:6-9**

* पतरस ऐसा क्यों कहता है कि वे मगन हो सकते हैं, यद्यपि वे अपनी समस्याओं के कारण भी दुखी हैं?
* क्या आप ऐसे एक समय का वर्णन कर सकते हैं जब आपने अपने प्राण में दुख महसूस किया, परंतु अपनी आत्मा में आनंद?
* पतरस क्यों कहता है कि हमारा विश्‍वास सोने से भी अधिक बहुमूल्य है?
* हमारा विश्‍वास तब साबित होता है जब हम प्यार कर सकते हैं और परमेश्‍वर पर विश्‍वास करते हैं, भले ही हम उसे नहीं देख पाते। इस प्रमाणित विश्‍वास का परिणाम क्या होगा? (8-9)
* क्या आपका बचाने वाला विश्‍वास आपके जीवन का सबसे बड़ा खजाना है? वर्णन कीजिये।

**तीसरा दिन**

**पढ़ें 1:10-12**

* वह कौन-सा अनुग्रह था जो आपके पास आया है, जो भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले से बताया गया?
* इन भविष्यद्वक्ताओं के मध्य में कौन रह रहा था और मसीहा के भविष्य के आगमन को प्रगट कर रहा था?
* वह महान रहस्य क्या था जिसकी स्वर्गदूत और भविष्यद्वक्ता दोनों खोज कर रहे थे?
* हम कैसे पुराने समय के भविष्यद्वक्ताओं के समान है, जो मसीह के आगमन की बाट जोह रहे हैं?

**चौथा दिन**

**पढ़ें 1:13-19**

* मसीह के प्रगटीकरण तक हमें अपनी बुद्धि, अपनी आत्मा और अपने ध्यान के साथ क्या करना है?
* इससे पहले कि हम परमेश्‍वर की संतान थे, हम अनभिज्ञ थे। अब, हमें क्या होना है?
* पतरस ऐसा क्यों कहता है कि हम इस पृथ्वी के अस्थाई निवासी है?
* कैसे हमारी नयी पहचान और नये निवास का परिणाम पवित्रता में होगा?

**पाँचवा दिन**

**पढ़ें 1:20-26**

* पद 20-21 संकेत करता है कि हमारा विश्‍वास और आशा परमेश्‍वर में जड़ पकड़े हुए हैं। क्यों?
* हमें एक-दूसरे से ईमानदारी से प्रेम करने के लिये क्या करना है?
* वह अविनाशी बीज या वह जीवित और न टलने वाला परमेश्‍वर का वचन क्या है?
* आज एक क्षण लीजिये यीशु को अनुमति देने के लिये कि वह आपके हृदय के भीतर के प्रेम को शुद्ध कर दे।

**अपनी आशा को पूर्णतया मसीह पर लगाये!**

**1 पतरस**

**अध्याय दो और तीन**

**विषय कथन:** यदि हमने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है, तो हम इस संसार में नम्रता और सहनशीलता के साथ रह सकते हैं।

**पहला दिन**

**पढ़ें 2:1-10**

* पतरस के अनुसार हम क्या करने के लिये अभिप्रेरित हैं क्योंकि हमने परमेश्‍वर की कृपा का स्वाद चख लिया है? (पद 1-3)
* पद 5 के अनुसार किस तरह के बलिदान परमेश्‍वर को ग्रहणयोग्य हैं?
* पद 4-8 में पतरस द्वारा उपयोग की गई निर्माण शब्दावली को परिभाषित कीजिये। इन शब्दों में वह किसे संबोधित कर रहा है:
* ‘जीवित पत्थरों’
* एक ‘चुना हुआ पत्थर’ या ‘बहुमूल्य कोने के सिरे का पत्थर’
* ‘राजमिस्त्रियों’ जिन्होंने पत्थर को ठुकरा दिया
* परमेश्‍वर की कृपाओं की सूची बनाये जो हमें प्रदान की गई है जो पद 9 और 10 में विश्‍वास करते हैं।

**दूसरा दिन**

**पढ़ें 2:11-12 और 3:13-17**

* पतरस पद 11 में हमें क्या कहता है?
* पद 12 के अनुसार हमें इस संसार में कैसे व्यवहार करना है? क्यों?
* पद 14 में, पतरस हमें बताता है कि डरे नहीं या परेशान न हो। इसके बजाय, पद 15 के पहले भाग के अनुसार हमें क्या करना है? (नोट: जो कुछ भी हम सबसे महत्वपूर्ण समझते हैं वही हमारे हृदयों का स्वामी होगा।)
* पतरस क्या कहता है कि जब हम भले कामों को करने के द्वारा दुख उठायेंगे, तो क्या होगा?

**तीसरा दिन**

**पढ़ें 2:13-21**

* हमें सरकारी अधिकारियों को कैसे प्रत्युत्तर देना है?
* जैसे ही हम इस क्षेत्र में परमेश्‍वर की इच्छा का आज्ञा पालन करते हैं, तब पतरस क्या कहता है कि क्या होगा? (पद 15)
* पद 16 में पतरस हमें क्या कहकर पुकारता है?
* हमें, कर्मचारियों या दासों के रूप में, जो हमारे ऊपर अधिकार रखते हैं उनके प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिये?
* जब हम इस रूप में समर्पण करने का चुनाव करते हैं पतरस क्या कहता है कि हम किसके पास लौट आये हैं? (पद 25)

**चौथा दिन**

**पढ़ें 3:1-12**

* अपने पतियों के संबंध में पत्‍नियों को पतरस की क्या आज्ञा है?
* पतरस एक महिला की सुंदरता के बारे में क्या कहता है? यह कहाँ से आती है?
* पद 4 में ‘दीनता’ के लिये यूनानी शब्द की व्याख्या एक प्राण जो विश्राम में है या एक प्राण जो परमेश्‍वर में भरोसा रखता है। जो एक मुश्किल चीज़ है, बाहरी रूप से शांत रहना या अपने हृदय में परमेश्‍वर पर भरोसा रखना?
* अपनी पत्‍नियों के संबंध में पतियों को पतरस की क्या आज्ञा है? इस क्षेत्र में अनाज्ञाकारिता का क्या परिणाम है?
* पद 9-12 में पतरस के शब्दों को आप कैसे संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे?

**पाँचवा दिन**

**पढ़ें 3:18-22**

* पद 18 के अनुसार मसीह किसके लिये मरा?
* मसीह की मृत्यु का क्या उद्देश्‍य था?
* पद 21 में पतरस बपतिस्मा को कैसे परिभाषित करता है?
* इस समय मसीह कहाँ पर विद्यमान है? अब उसके अधिकार के अधीन कौन हैं?

**मसीह के उदाहरण का अनुसरण करें और अपने आपको पूरी तरह से अपने स्वर्गीय पिता को सौंप दे!**

**1 पतरस**

**अध्याय चार**

**विषय कथन:** शरीर के लिये जीवन जीने का हमारा समय खत्म हो चुका है और अब हम परमेश्‍वर की महिमा के लिये जीयेंगे।

**पहला दिन**

**पढ़ें 4:1-3**

* हम मसीह के साथ कौन-से उद्देश्‍य में सहभागी हैं?
* पतरस कहता है कि दैहिक पापों का हमारा समय खत्म हो चुका है और अब हमें परमेश्‍वर की इच्छा के लिये जीवन जीना है। कैसे समस्याओं ने आपकी पाप को एक तरफ करने और इसके बजाये जो परमेश्‍वर चाहता है उसे करने पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता की है?
* कौन-से पुराने पापों को अब आप पीछे छोड़ रहे हैं, ताकि आप परमेश्‍वर की इच्छा के लिये जीवन जी सकें? इन्हें परमेश्‍वर और एक विश्‍वसनीय मित्र या अगुवे के सामने अंगीकार करें।

**दूसरा दिन**

**पढ़ें 4:4-6**

* इन पदों के अनुसार क्या, क्या हमें संसार के साथ ‘मेल खाने’ की ज़रूरत है?
* जब दूसरे हमारी जीवनशैली को देखते हैं, तो हमें किस प्रकार की प्रतिक्रिया की अपेक्षा करनी चाहिये? और 3:15 के अनुसार हमें उन्हें किस प्रकार से प्रत्युत्तर देना चाहिये?
* पद 6 के अनुसार सुसमाचार का एक विशेष उद्देश्‍य है। वह क्या है?

**तीसरा दिन**

**पढ़ें 4:7-11**

* पतरस पद 7 में बताते हैं कि हम अंतिम दिनों में जी रहे हैं। इसके कारण, किस प्रकार की मानसिकता हमारे अंदर होनी चाहिये?
* पतरस पद 7 में एक बार फिर उद्देश्‍य को बताता है। यहाँ पर किस उद्देश्‍य को संबोधित किया गया है?
* बाकी सब के अलावा, हमें एक-दूसरे के प्रति प्रेम दिखाना है, पद 8 के अनुसार इससे क्या प्राप्त होता है? एक पल लीजिये यीशु को इस तरह के प्यार को आपको दिखाने के लिये धन्यवाद देने के लिये ।
* पतरस एक-दूसरे के प्रति प्रेम दिखाने के लिये कौन-से विशेष तरीकों को बताता है?

**चौथा दिन**

**पढ़ें 4:12-16**

* पतरस कहता है हमारे ऊपर समस्यायें किसी कारण से आती हैं। वह क्या है?
* अब से लेकर अनंतकाल तक, पतरस कहता है कि हम आनंदित हो सकते हैं, क्यों?
* जब हमें मसीह के कारण प्रताड़ित किया जाते है, तो हमारे पास क्या प्रतिज्ञा है?
* 1 कुरि 1:18 कहता है परमेश्‍वर की बातें लोगों के लिये मूर्खता है, पर हम जानते हैं कि यह परमेश्‍वर की सामर्थ है। इसी प्रकार से, पतरस हमें उत्साहित करता है कि मसीह के लिये दुख उठाने में कोई शर्म की बात नहीं है। वास्तव में, वह कहता है कि हम मसीह के साथ उसके दुखों में सहभागी हो रहे हैं।
* क्या आपने संसार को आपको शर्मिन्दा करने की इजाजत दी है जिसके लिये परमेश्‍वर कहता है कि यह आपकी आशीष है?

**पाँचवा दिन**

**पढ़ें 4:17-19**

* पद 17 के अनुसार, परमेश्‍वर के अति प्रिय घराने के साथ क्या आरंभ हो चुका है?
* कैसे यह सत्य आपके हृदय को बदल सकता है उन लोगों के प्रति जिन्होंने आपको प्रताड़ित किया है?
* जब हम प्रताड़ित किये जाते हैं, तब उनसे वापस लड़ना यह हमारा शारीरिक स्वभाव है, पर 1 पतरस 2:21-23 के अनुसार यीशु ने अपने दुख को कैसे सहन किया?
* पद 4:19 के अनुसार, हमें कैसे उसके समान करना है?

अपने आप को मसीह के मन के साथ शस्त्रयुक्त करें ताकि आप आनंद के साथ प्रार्थना, प्यार, कार्य और दुख उठा सकें।

**1 पतरस**

**अध्याय पाँच**

**विषय कथन:** हमारे पृथ्वी पर के समय के दौरान, हमें अवश्‍य ही स्वयं को मुख्य चरवाहे को सौंपना है, विश्‍वास में दृढ़ खड़े रहना है, और शैतान का सामना करना है।

**पहला दिन**

**पढ़ें 1 पतरस 5:1-4**

* पतरस पद 1 में जब नेतृत्व के मुद्दे पर बात करने के लिये, किस प्रकार से अपने अधिकार को स्थापित करता है?
* पतरस प्राचीनों को कौन-सी बातें करने के लिये कहता है?
* वह किन तीन बातों के विरूद्ध में उन्हें सावधान करता है?
* आप किस प्रकार के अगुवे हैं? एक मिनट ले और मुख्य चरवाहे से उन लोगों के लिये जिन्हें उसने आपको सौंपा है नम्रता और प्यार को माँगे उनकी देखभाल करने के लिये ।

**दूसरा दिन**

**पढ़ें 1 पतरस 5:5-7**

* पद 5 में पतरस प्रत्येक को क्या निर्देश देता है?
* कुलुस्सियों 3:12-15 के अनुसार, कौन-से ऐसे तरीके हैं जिससे हम स्वयं में नम्रता धारण कर सकते हैं?
* इन पदों में, पतरस हमें घमंड़ के विरूद्ध हमारी दशा में, उत्साह के तीन शब्दों को देता है। वे क्या हैं?
* एक पल ले उन चीज़ों को जो आपको चिंतित करती है, परमेश्‍वर, एक जो आपकी देखभाल करता है उसको समर्पित करने के लिये।

**तीसरा दिन**

**पढ़ें 1 पतरस 5:8-9**

* पतरस हमें अपनी पत्री में संयमी और/या सतर्क रहने के लिये तीन बार सावधान करता है (1:13; 4:7; 5:8)। इन पदों को दुबारा पढ़ने के लिये एक मिनट ले।
* पतरस पद 8 में अपनी चेतावनी के लिये क्या कारण देता है? (इफिसियों 6:10-12)
* प्रकाशितवाक्यय 12:9 हमें एक तरीका देता है जिस प्रकार शैतान अपने शिकार को निगल जाता है। वह क्या है?
* पद 9 के अनुसार, हमें कैसे शैतान का सामना करना है?
* क्या इन बातों ने आपकी मदद की यह जानने में कि मसीह में आपके भाई और बहन इस संसार में समान समस्याओं का अनुभव कर रहे हैं?

**चौथा दिन**

**पढ़ें इब्रा 11:1-6, याकूब 5:7-10**

* इब्रानियों 11:1 पद में विश्‍वास की परिभाषा क्या है?
* कौन-सी ऐसी दो बातें हैं जिन पर हम विश्‍वास के द्वारा भरोसा करते हैं (इब्रा 11:6)?
* याकूब इस विचार को दोहराता है कि हमें इस पृथ्वी पर दुख के समय को धीरज के साथ सहन करना है। हम किस बात की धीरज से बाट जोह रहे हैं?

**पाँचवा दिन**

**पढ़ें 1 पतरस 5:10-14 और अय्यूब 42:1-6, 10-17**

* पतरस कौन-सी चार बातों का उल्लेख करता है जो परमेश्‍वर उनके लिये करेगा जो विश्‍वास में दृढ़ खड़े रहेंगे?
* याकूब विश्‍वासयोग्यता से सहन करने के उदाहरण के रूप में अय्यूब को प्रस्तुत करता है। उसने बड़ा दुख उठाया और परमेश्‍वर ने उसे बड़ा प्रतिफल दिया। कैसे परमेश्‍वर ने अय्यूब की आत्मा को उसके दुख के समय के बाद सिद्ध, मज़बूत, आश्‍वस्त व स्थापित किया (अय्यूब 42:1-6)? कैसे परमेश्‍वर ने उचित समय पर अय्यूब को उन्नत करने को सही समझा (1 पतरस 5:6 और अय्यूब 42:10-17)?
* आप अपना बाकी समय एक-दूसरे के लिये प्रार्थना करने में बिताये, कि परमेश्‍वर आप में से प्रत्येक को आपकी विभिन्‍न समस्याओं में उत्साहित व मज़बूत करे, कि वह आपको काबिल बनाये कि आप विश्‍वास में दृढ़ खड़े रहें सकें और परमेश्‍वर की महिमा के प्रगट होने के लिये धीरज से बाट जोहते रहें।

**विश्‍वास में दृढ़ता से खड़े रहें और धीरज से सहन करते रहें जब तक कि परमेश्‍वर की महिमा प्रगट नहीं हो जाती।**

**1 पतरस का परिचय**

**एक जीवित आशा दुख उठाने वाले संतों के लिये**

**लेखक**

आरंभिक कलीसिया एकमत होकर इस बात को स्वीकार किया कि पतरस ही इस पत्री का लेखक है। पहले ही पद में, पतरस अपने आपको यीशु मसीह का प्रेरित के रूप में परिचित कराता है। मूल 12 चेलों में से एक के रूप में, पतरस मसीह के अंदरूनी दल में था और उसने अनेक बार मसीह के लिये बड़े वीरता के कामों को प्रयासित किया। वह पानी पर चला (मत्ती 14:28-30), यीशु मसीह के येरूशलेम लौटने को लेकर उसके साथ बहस की (मत्ती 16:21-23), मसीह के साथ मरने की कसम खाई (मत्ती 26:35), और उसने एक दास का कान काट दिया जब यीशु को गतसमनी के बाग में पकड़ा गया (यूहन्‍ना 18:10)। परंतु, उसने मसीह का विश्‍वासघात भी किया जब उसने सच्‍ची शिष्‍यता की कीमत के साथ आमना-सामना किया (लूका 22:54-62)। उसके पुनरूत्थान के बाद, यीशु ने सामरियों और अन्यजातियों के मध्य सुसमाचार के फैलाव में एक केंद्रिय भूमिका निभाने के लिये पतरस को पुनः स्थापित किया और उसे अधिकृत किया(प्रेरित 2:10)। इतिहास हमें बताता है कि बाद के जीवन में जब चेलेपन की निर्णायक कीमत के साथ उसका सामना हुआ वह असफल न हुआ। नीरो के निर्दयी शासनकाल में, उसने मसीह की तरह क्रूस पर चढ़ने से इंकार कर दिया। अपने आप को मसीह का सेवक घोषित करते हुए, उसने निवेदन किया कि उसको उल्टा क्रूस पर चढ़ाया जाये (67-68 ईसा बाद)।

**श्रोतागण**

पतरस ने “चुने हुए” परमेश्‍वर के लोगों को लिखा जो एशिया माइनर में “परदेशियों” की तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे (1:1)। इन मसीहों, यहूदियों या अन्यजातियों ने हम इस बारे में निश्‍चित नहीं है, येरूशलेम को छोड़ दिया था जब आरंभिक कलीसिया के विरोध में उपद्रव होने लगा (प्रेरितों 8:14; 11:19-20)। वे अपने साथ सुसमाचार के संदेश को ले गये और इस तरह मसीह की आज्ञा “जाओ” को पूरा किया (प्रेरित 1:7-9)।

**समय**

ज्यादातर विद्वान इस बात पर सहमत है कि 1 पतरस की पुस्तक 62-64 ईसा बाद के बीच रोम से लिखी गई थी। उसने यह पत्री तब लिखी जब एशिया माइनर में विश्‍वासियों क प्रति बढ़ती शत्रुता का समाचार उसे प्राप्‍त हुआ। सताव, जो अपने यहूदी भाईयों द्वारा येरूशलेम में शुरू हो चुका था वो पूरे विदित विश्‍व में फैलता जा रहा था। नीरो के हाथों मसीहियों के कुख्यात अत्याचार का मंच तैयार किया जा रहा था और कुछ विद्वान यह तर्क करते हैं कि यह प्रचण्ड अग्‍नि परीक्षा पहले से ही उनके ऊपर थी।

यह महान पीड़ा तब शुरू हुई जब नीरो ने रोम में अपने महल में आग लगवा दी और इसके साथ-साथ शहर के कई सारे हिस्से भी बर्बाद कर दिये गये। जनता की चिल्‍लाहट ने उसे अभिप्रेरित किया कि वह इस अपराध का दोष डालने के लिये किसी और को ढूँढ़ें। मसीही पहले से ही ‘व्यभिचार और मनुष्य का माँस खाने’ की उनकी अफवाहों को लेकर सामाजिक परीक्षण में थे जो केवल एक पवित्र चुम्बन के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करना और प्रभु-भोज में सहभागी होने से ज्यादा और कुछ नहीं है। तो मसीहियों पर अपने विध्वंसकारी कार्यों का दोष डालना नीरो के लिये बहुत आसान था।

 यह इसी समय के दौरान ही था कि येरूशलेम में यहूदियों ने रोम के विरूद्ध बगावत आरंभ कर दी और एक खून से भरा हुआ युद्ध शुरू हुआ जो चार सालों तक चला। अंत में, रोम ने पूरी तरह से विजय को हासिल किया। 70 ईसवी में, मंदिर को नष्ट किया गया और यहूदी बंदियों को मार डाला गया।

संक्षिप्‍त में, आरंभिक कलीसिया के लिये ये साल खून से भरे हुए और अनिश्‍चित थे। मसीहत में परिवर्तित होने के कोई सामाजिक लाभ नहीं थे, जबकि हकीकत में बहुत से मामलों में, यह मृत्यु दंड़ था। फिर भी, हमारे पास यहाँ आरंभिक कलीसिया के बीज हैं। (मत्ती 16:18) में मसीह द्वारा कहे गये शब्दों को इतिहास ने साबित किया है “*तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर मेरी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे*”।

**विषय-वस्तु**

पतरस ने सुना कि एशिया माइनर में विश्‍वासियों के प्रति विरोध बढ़ता जा रहा था। अतः, उसने इसलिये लिखा कि जो सुसमाचार की खातिर दुख उठा रहे थे उन्हें उत्साह व सांत्वना देने के लिये। यह पहली पत्री अकसर नये नियम के “अय्यूब” के रूप में संबोधित की जाती है क्योंकि यह विश्‍वासियों को उत्साहित करती है कि वे नम्रता, धार्मिक जीवन जीये और कठोर व्यवहार को सहन करें, यहाँ तक कि अधर्मी अधिकारियों के हाथों से। इस तरह की एक जीवनशैली के लिये केंद्र बिंदु अवश्‍य ही, यीशु मसीह है। मुश्‍किल समयों में भी प्रेम और आशा के एक व्यवहार को बनाये रखने के लिये महान नम्रता की आवश्‍यकता है। केवल मसीह ही हमें इस तरह के कार्य को करने के योग्य बना सकता है।

हमारी सेवकाई दूसरों के प्रति हमेशा जो कुछ परमेश्‍वर ने हमें दिया है उसका उमड़ना है। इस तरीके से, पतरस विशिष्ट रूप से प्रशिक्षित था इस पत्री में पाये जाने वाले संदेश को लिखने के लिये। एक-दूसरे के साथ उनके संक्षिप्त सालों में, यीशु पतरस के अंदर नम्रता के एक सहनशील हृदय का कार्य कर रहा था। अपने शरीर में, पतरस एक जूनूनी और उग्र पुरूष था जो यह विश्‍वास करना चाहता था कि उसके पास परमेश्‍वर के लिये अंधकार से लड़ने हेतु संसाधन थे। पर यीशु ने उसे सिखाया कि हम जो युद्ध लड़ते हैं वो माँस और लहू के खिलाफ नहीं है कि हमारे युद्ध के हथियार हमारे अपने नहीं है, और कि हमारा जो रुख है वो एक म्र हृदय और एक झुके हुए घुटने का होना चाहिये। जब उसकी परीक्षा का समय आया, तब पतरस एक शक्तिशाली और भले परमेश्‍वर में आनंद और आशा को बनाये रखने के काबिल था। यही है जिसे पतरस ने विश्‍वासयोग्यता से अपने पाठकों तक पहुँचाया।

**पाठ 1:** “एक जीवित आशा”

**विषय-वस्तु:** अध्याय 1

**प्रमुख पद:** 1:20-21, “उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहले ही से जाना गया था**,** पर अब इस अंतिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ। उसके द्वारा तुम उस परमेश्‍वर पर विश्‍वास करते हो, जिन्‍होंने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी कि तुम्हार विश्‍वास और आशा परमेश्‍वर पर हो।“

**विषय वाक्य:** वह उद्धार जो हमने मसीह में पाया है उसमें आज के लिये एक जीवित आशा और कल के लिये एक अविनाशी मीरास शामिल है जिसका परिणाम पवित्र जीवन जीना और प्रेम होता है।

**जीवन का सिद्धांत:** अपनी आशा को संपूर्ण रीति से मसीह पर लगाये।

**सारांश:** दुख उठाना एक ऐसी समस्या जो बहुतों के हृदय को जकड़ कर रखता है और पतरस उस पूरे जज़्बे के साथ जिसकी हम सुसमाचार लेखों में उससे अपेक्षा करते हैं इससे निपटता है। वह उन्हें उनकी नई पहचान का और मसीह के कार्यों के कारण उनके लिये संरक्षित कुछ भविष्य की बातों को उन्हें स्मरण दिलाते हुए आरंभ करता है। वह उन्हें स्पष्ट रूप से बताता है कि वे लोग परमेश्‍वर द्वारा चुने गये हैं, उसके पूर्वज्ञान के अनुसार, वे यीशु के प्रति आज्ञाकारी थे जिसने अपने लहू को उनके ऊपर छिड़का, और वे पवित्र आत्मा के कामों द्वारा शुद्ध किये जा रहे थे। इस तरह से, वह उनके हृदयों में परमेश्‍वर के त्रिएक कामों को प्रमाणित कर रहा था और परमेश्‍वर की प्रशंसा हो, हमें भी इन सच्‍चाईयों का दावा कर सकते हैं।

वह वहाँ से आशा की ओर बढ़ता है, दोनों पवित्र आत्मा के भीतर निवास करने की आशा द्वारा और अनंतता का भविष्य और निश्‍चित आशा। यह ‘जीवित आशा’ उस स्वर्गीय राज्य के समान नहीं है जो हमारा इंतज़ार कर रही है, यद्यपि हम अनंतता का इतज़ार कर रहे हैं और यह एक सुरक्षित और स्थाई भविष्य है। यह ‘जीवित आशा’ परमेश्‍वर का राज्य है, हमारे रचनाकार की स्थायी उपस्थिति, बहुतायत का जीवन जो हमारे हृदयों में फूट पड़ता है। अब यह अनंतता है जो हमारे अंदर वास करती है! तौभी, बहुत कुछ और है जो मसीह के लौटने पर प्रगट किया जाना है। “महिमा से महिमा तक” सर्वोत्तम अभी आना बाकी है।

इन सब में, पतरस दुखों के बीच में आराधना के एक आहवान के रूप में बुनियादी सच्‍चाईयों पर पुनः बल देता है। वह उन्हें स्मरण कराता है कि उनके वर्तमान दुख उनके विश्‍वास को पक्‍का करेंगे और जब मसीह प्रगट होगा तब स्तुति और महिमा को उत्पन्न करेंगे। यीशु का यह भविष्य प्रकाशन था जिसे पूर्वकाल के सारे भविष्यद्वक्ताओं ने अंकित किया और यह भविष्य की पीढ़ियों के लिये था कि उन्होंने सेवकाई की। अतः, उनके पास स्थिर आनंद और स्पष्ट मन हो सकता था और हमारे पास हो सकता है जैसे-जैसे हम एक पवित्र जीवन जीते हैं एक आशा के साथ जो मसीह पर निर्धारित है (पद 13)। जैसे कि हम अधिकतर दूसरी नये नियम की पुस्तकों में देखते हैं, पतरस घोषणा करता है कि इन परिवर्तित करने वाली सच्‍चाईयों का परिणाम एक पवित्र जीवन और भाइयों के लिये प्रेम है (22)।

**पाठ 2:** “सांसारिक अधिकारियों को समर्पण”

**विषय-वस्तु:** अध्‍याय 2-3

**प्रमुख पद:** 2:13-14, “प्रभु के लिये मनुष्य के ठहराये हुए हर एक प्रबंध के अधीन रहो, राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है, और हाकिमों के क्योंकि वे कुकर्मियों को दंड़ देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उनके भेजे हुए हैं।“

**विषय वाक्य:** यदि हमने परमेश्‍वर की कृपा का स्वाद चख लिया है, तब हम इस संसार में नम्रता और सहनशीलता के साथ जी सकते हैं।

**जीवन का सिद्धांत:** मसीह के उदाहरण का पीछा करें और अपने आपको संपूर्ण रीति से अपने स्वर्गीय पिता को सौंप दे।

**सारांश:** सांसारिक अधिकारियों के अधीन रहना, खास करके भ्रष्ट अधिकारियों के, यह काम करना एक आसान बात नहीं है, पर अध्याय 2 और 3 में यह पतरस की प्राथमिक शिक्षा है। वह हमें आग्रह करने के द्वारा आरंभ करता है कि हम शारीरिक लालसाओं से बचे रहे और हमअपनी लालसाओं को “वचन के निर्मल दूध” पर लगाये (2:2, 11) हम यह करने के लिये अभिप्रेरित होते हैं क्योंकि हमने “परमेश्‍वर की कृपा का स्वाद चख लिया है” (2:3)। उसके महान प्रेम के कारण उसने हमें पापपूर्ण अंधकार से जिसने हमें अधा कर दिया था छीना है और हमें ज्योति में लेकर आया है। उसने हम पर अपनी दया प्रदान की है और हमें राजपरिवार का सदस्य बना लिया है। और इसलिये, पतरस हमें चुनौती देता है कि हम अनंतकाल के राजा के पवित्र राष्ट्र की तरह जीवन जीयें (2:9-10)।

शेष अध्याय 2 और संपूर्ण अध्याय 3 के शेष के लिये, पतरस इस अधीनता पर अधिक विस्तारित निर्देश को हमें उपलब्ध कराता है, अतः सरल व्याख्याओं को स्थापित किये जाने की किसी भी संभावना को हटा देता है। वह राजनैतिक अधिकारों के प्रति हमारी अधीनता को संबोधित करता है, चाहे वे न्यायी हो या अन्यायी। वह वाणिज्य में अधीनता को संबोधित करता है, दासों को आज्ञा देते हुए कि वे अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करें। वह वैवाहिक अधिकारों के प्रति अधीनता को संबोधित करता है, दोनों पति अपने आपको अपनी पत्‍नी को समर्पित करें प्रेम में, और पत्‍नी भी अपने आप को अपने पति को समर्पित करें इज्‍जत या आज्ञापालन में। और, वह यह कहकर इन निर्देशों का सार प्रस्तुत करता है कि हम, “एक मन, कृपामय, भाईचारे की प्रीति रखने वाले, करूणामय और नम्र बनें” (3:8)।

 परंतु, हम स्वयं की इच्छा पर नहीं है कि यह अधिनता कैसी दिखती है इसे परिभाषित करें। मसीह, स्वयं ही हमारा उदाहरण है “तुम इसी के लिये बुलाये भी गये हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्‍हों पर चलो। न तो उसने पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्‍चे न्‍यायी के हाथ में सौंपता था” (2:21-23)।

**पाठ 3:** “मसीह का मन”

**विषय-वस्तु:** अध्याय 4

**प्रमुख पद:** 4:1, “इसलिये जबकि मसीह ने शरीर में होकर दुख उठाया तो तुम भी उसी मनसा को हथियार के समान धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुख उठाया वह पाप से छूट गया।”

**विषय कथन:** शरीर के लिये जीवन जीने का हमारा समय खत्म हो चुका है और अब हम परमेश्‍वर की महिमा के लिये जीयेंगे।

**जीवन का सिद्धांत:** अपने आपको मसीह के मन से शस्त्रयुक्त करें ताकि आप आनंद के साथ प्रार्थना, प्रेम, कार्य और दुख उठा सकें।

**सारांश:** अवश्‍य ही, संसार हमारी अभिप्रेरणाओं को नहीं समझेगा और वे हमारे व्यवहार का गलत अर्थ लगायेंगे। आरंभिक मसीह कलीसिया ने निंदात्मक परीक्षण को सहन किया। प्रभु-भोज और भाईचारे के प्रेम के विषय में अफवाहें उड़ा दी गई कि ये नशे में धुत महफिलों, मनुष्य का माँस खाने और यौन अनैतिकता से ज्यादा कुछ नहीं। परंतु पतरस कहता है कि यदि हम भले कामों को करने के कारण दुख उठाते हैं तो हम दोषमुक्त किये जायेंगे (4:5-6)।

भले ही मार्ग अंधेरा और दुखदायी हो, हम परमेश्‍वर की सिद्ध इच्छा में चल सकते हैं। पतरस के अनुसार, हमारा दुख असाधारण या अप्रत्याशित नहीं है। सब बातों का अंत निकट है और परमेश्‍वर का न्याय उसके अपने लोगों से शुरू हो चुका है (4:7, 17) पर, हम परमेश्‍वर द्वारा दंडित नहीं किये जा रहे हैं और हमें शर्मिन्दा होने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि इसका परिणाम महान हर्षोल्‍लास होगा (4:13)। हम मसीह के दुखों मे सहभागी हो रहे हैं! इस परीक्षा की घड़ी में, उसका आत्मा महिमा के रूप में हम पर छाया करता है (4:14)।

पद 17 एक बहुत ही मुश्‍किल, पर परिवर्तित सत्य को लाता है। हम मसीह के अनुग्रह, आशीष और संगति के साथ दुख उठाते हैं और हम जानते हैं जब वह महिमा में प्रगट होगा, तब हम इससे कहीं ज्यादा आनंदित होंगे। परंतु, हमारा दुख हैं उसे बड़े प्रचण्ड क्रोध की परछाई है जो मानव जाति के पापों के ऊपर उंड़ेला जायेगा। हम पाप के ऊपर परमेश्‍वर के एक छोटे-से माप का अनुभव कर रहे हैं। जब वह प्रगट होगा, तब हम आनंदित होंगे, परंतु बाकी सारा संसार कठोर दुख में भस्म हो जायेगा। अब हम और शरीर के लिये नहीं जी रहे हैं (4:2)। अब हम परमेश्‍वर के साथ संसार के प्रति उसके संदेश में जुड़ रहे हैं। हमारे दुख खोये हुए संसार के लिये एक चेतावनी पेश करते हैं कि उनके लिये क्या आनेवाला है यदि वे पश्‍चाताप नहीं करेंगे तो। उन लोग के समान जिनके पास एक अविनाशी मीरास आनेवाली है और जिनके पास आज के लिये एक जीवित आशा है, यह हमें एक गंभीर अत्यावश्‍यकता देता है कि अपने शत्रुओं को क्षमा करें और उन के लिये जो हमें सताते हैं प्रार्थना करें।

इस उद्देश्‍य के अतिरिक्त (4:7), हमें उसकी देह में एक महत्वपूर्ण भूमिका भी निभानी है (4:13;10) खास तौर से इन चुनौतीपूर्ण समयों के दौरान, हमें गंभीर और सतर्क रहना है ताकि हम प्रभावी रूप से प्रार्थना कर सकें, हमें एक-दूसरे से प्रेम करना है, हमें मसीह की देह की उन्नति के लिये परमेश्‍वर के अनुग्रह का अभ्यास करना है, और हमें सुसमाचार के खातिर न्यायसंगत रूप से व्यवहार करना है (7-8, 10, 15-16)। अपने शुरूआती बिंदु पर वापस आते हुए, यह तभी संभव होगा जब हम अपने आप को पिता की देखभाल के प्रति सौंपेंगे जैसा कि मसीह ने किया (4:19)।

**पाठ 4:** “विश्‍वास में दृढ़ता से खड़ा रहना”

**विषय-वस्तु:** अध्याय 5

**प्रमुख पद:** 5:6, “अब परमेश्‍वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनंत महिमा के लिये बुलाया है, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवंत करेगा।“

**विषय कथन:** हमारे पृथ्वी पर के समय के दौरान, हम अपने आप को मुख्य चरवाहे को सौंप दे, विश्‍वास में दृढ़ता से खड़े रहें और शैतान का सामना करें।

**जीवन का सिद्धांत:** विश्‍वास में दृढ़ता से खड़े रहें और धीरज से सहते रहें जब तक कि परमेश्‍वर की महिमा प्रगट नहीं हो जाती।

**सारांश:** अन्यायी अधिकारियों के हाथों बड़ी पीड़ायें उठाने के समय में, पतरस कलीसिया के अंदर प्राचीनों को प्रोत्साहित करता है कि वे अपने आप को सेवक अगुवों के रूप में अलग करें। उन्हें मसीह के लोगों के ऊपर उस प्रकार प्रभुता नहीं करनी है जैसे कि वे जो संसार में हैं करते हैं (5:3 और मत्ती 20:25-28)। मसीह के झुंड़ के चरवाहे होने के नाते, उन्हें भेड़ों की देखभाल करनी है और उनके लिये एक उदाहरण रखना है कि वे अनुसरण करें बजाये इसके कि कठोरता और अनावश्‍यक माँग करते हुए उन पर बोझ डाले। इन अगुवों को अपनी जिम्‍मेदारी उत्सुकता के साथ स्वेच्छा से स्वीकार करनी है उनके समान जो स्वयं मसीह की सेवा कर रहे हैं। और जब वह लौटेगा, तब मुख्य चरवाहा उनका आदर करेगा।

आगे, पतरस कहता है, “वरन तुम सब के सब, एक-दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो” (5:5)। मसीह की देह में, हमारे पास अलग-अलग वरदान और अलग-अलग भूमिकायें हैं, पर हम इन भूमिकाओं को नम्रता के एक रवैये के साथ निभाते हैं। वास्तव में, हम परमेश्‍वर के राज्य में बहुमूल्य पत्थर हैं और मसीह के साथ संगी वारिस, पर जो उदाहरण मसीह ने हमारे सामने पेश किया है वो नम्रता का है (2:5)। यह जो नम्रता है वो डर की पैदाईश नहीं थी, जो नम्रता हम शरीर में देखते हैं। मसीह की नम्रता आत्मा से उत्पन्न थी, जो पिता में उसके भरोसे द्वारा कि वह उसकी देखभाल करे प्रमाणित की गई (यूहन्‍ना 2:24 और 1 पतरस 2:23)। “इसलिये परमेश्‍वर के बलवंत हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाये, अपनी सारी चिंता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है” (5:6-7)।

तीसरी बार, पतरस हमें स्मरण दिलाता है कि हमें सचेत और गंभीर होना है क्योंकि हमारा एक शत्रु है जो लगातार इसी खोज में लगा रहता है कि जो अल्पनिद्रा में है उन्हें नष्ट कर डाले (इफिसियों 5:13-16)। हम जिनके पास मसीह का मन है हमें शैतान के धोखों, इल्जामों और झूठे समाधानों से जागरूक रहना है। यह तभी संभव है जब हम अपना विश्‍वास इस बात में रखते हैं कि परमेश्‍वर कौन है और वह हमारी जगह क्या प्राफ्त करेगा।

इब्रानियों 11:1 के अनुसार, विश्‍वास यह है कि, “विश्‍वास करना कि वह है, और कि वह अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है” (इब्रानियों 11:6)। पतरस अपनी पत्री के सबसे आखिर में उस ईनाम का वर्णन करता है। “अब परमेश्‍वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने मसीह में तुम्हें अपनी अनंत महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवंत करेगा” (5:10)। जितना अधिक साफ-साफ अय्यूब, 1 पतरस की किताब का पुराना नियम साथी, की पुस्तक में वर्णन किया गया है उससे ज्यादा हम बाइबल में और कहीं नहीं पाते। याकूब जब अपने पाठकों को धीरज के साथ परमेश्‍वर की बाट जोहते रहने के लियेउत्साहित करता है तो वह अय्यूब का हवाला देता है। “देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुम ने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यंत करूणा और दया प्रगट होती है” (याकूब 5:11)। हालांकि परमेश्‍वर ने अय्यूब को एक अवधि तक बड़े भयानक दुखों में से होकर जाने की इजाज़त दी, उसने उसे बड़ा प्रतिफल भी दिया। परमेश्‍वर की करूणा कभी ना खत्म होने वाली है! उसकी भलाई जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं उससे कहीं अधिक महान है। ना केवल वह पीड़ाओं के समय में हमें अपने अनुग्रह के द्वारा उठायेगा, पर वह हमारी पीड़ा को लाभप्रद बनाने की भी प्रतिज्ञा करता है। उसके अनुग्रह के द्वारा, हम इस संसार में बचने वाले नहीं, पर विजय पानेवाले हैं (प्रकाशितवाक्य 12:11)!